International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 60-61

ऋग्वेदीय आदित्य देवता की वैज्ञानिक विशेषताएँ

जलज कुमार

संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

प्रस्तावना

ऋग्वेद में आदित्य देवता

वैदिक साहित्य में आकाश से सम्बन्धित दिव्य-शक्तियों के कारण आदित्य का महत्व अद्वितीय है। यह आदित्य के निमित्त छः सकल सूक्त और दो सूक्तांश (लगभग 100 मन्त्र) ऋग्वेद में आये हैं। यह एक गण देवता है तथा ऋग्वेद के अनेक उत्कृष्ट देवता इस गण में परिगणित हैं। आचार्य यास्क निरुक्त में कहते हैं –

> **आदत्ते रसान्, आदत्ते भासं ज्योतिषाम्, आदीप्तोभासेति वा, अदितेः पुत्र इति वा।**[1]

अर्थात् रश्मियों के द्वारा यह रसों को ग्रहण करता है। चन्द्रादिकों के प्रकाश को ले लेता है (आदित्य के उदय होने पर चन्द्र आदि सब प्रभा-हीन हो जाते हैं)। प्रकाश से यह आवृत्त है। यह अदिति का पुत्र है, अतः इसे आदित्य (अदिति का अपत्य) कहते हैं।[2]

आदित्य (सूर्य) को आधिभौतिक दृष्टि से देखा जाए तो यह समस्त प्रकृति के क्रियाकलापों को नियन्त्रित और सञ्चालित करता है। आधिदैविक दृष्टि से यह इन्द्र और अग्नि से अभिन्न होता हुआ उनमें विद्यमान है। आध्यात्मिक दृष्टि से यह परमेश्वर का उत्तम प्रतिरूप है क्योंकि भौतिक सूर्य को देखकर मनुष्य को परमेश्वर की सर्वव्यापकता, सर्वशक्तिमत्ता और अद्वितीय तेजस्विता का बोध होता है।

ऋग्वेद में आदित्यों का वैज्ञानिक स्वरूप

ऋग्वेद में सूर्य-विषयक वैज्ञानिक ऋचायें पर्याप्त मात्रा में वर्णित हैं। अन्तरिक्ष में विचरते सूर्य को ही आदित्य कहा जाता है। अदिति का पुत्र होने के कारण सूर्य को आदित्य का रूप कहा जाता है। सूर्य संसार की आत्मा है, चेतना का केन्द्र है, प्रकाश का स्रोत है, अहोरात्र का कर्ता है, संवत्सर का आधार है, वृष्टि का कर्ता है, पर्यावरण का रक्षक है, प्रदूषण का नाशक है और सभी पदार्थों को रूप रंग का दाता है।

सूर्य संसार की आत्मा है-

ऋग्वेद में कहा गया है कि सूर्य चर और अचर जगत् की आत्मा है-

> **"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च"**[3]।

इसका अभिप्राय यह है कि सूर्य की सत्ता से ही सारे जीवजगत् और वृक्ष-वनस्पतियों में जीवन शक्ति है। सूर्य शक्ति और चेतना का स्रोत है, प्रकाश का आधार है और विश्व को प्रेरणा प्रदान करता है। सूर्य को आत्मा कहने का अभिप्राय यहाँ यह भी है कि सूर्य न केवल सूर्य न केवल पृथ्वी, अपितु पूरे सौर मण्डल के ग्रहों-उपग्रहों आदि की ऊर्जा का स्रोत है। सूर्य ही इन ग्रहों आदि का नियामक है। वही अपने आकर्षण से पृथ्वी को रोके हुए है। सूर्य की ऊर्जा से ही चर और अचर जगत् मे गति, प्रगति और विकास है।

रोग नाशक सूर्य-

ऋग्वेद में सूर्य की किरणों से सारे रोगों की चिकित्सा का वर्णन प्राप्त होता है। ऋग्वेद के मन्त्र में वर्णित है कि उदय होते सूर्य की अवरक्त किरणें सभी रोगों को, हृदय की सभी बीमारियों को, खून की कमी (रक्ताल्पता) आदि को दूर करती है।

> **उद्यन् अद्य मित्रमह आरोहन् उत्तरां दिवम्।**
> **हृद् रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय॥**[4]

सूर्य और पृथिवी घूमते हैं-

वेद में वर्णन प्राप्त होता है पृथिवी, सूर्य और सारा संसार चक्कर काटते रहते हैं। पृथिवी सूर्य के चक्कर काटती है और सूर्य अपनी धुरा पर घूमता है। इसी प्रकार यह सारा संसार गतिशील है। ऋग्वेद के अनुसार सूर्य रथ के पहिए की तरह निरन्तर घूमता रहता है।

> **स सूर्यः पर्युरू वरांस्येन्द्रो ववृत्याद्रथ्येव चक्रा।**
> **अतिष्ठन्तमपस्यं न सर्गं कृष्णा तमांसि त्विष्या जघान॥**[5]

सौर ऊर्जा (Solar energy) का दोहन-

ऋग्वेद में वर्णन है कि त्रित (तीन देवों का समूह) ने सूर्य से ऊर्जा का दोहन किया। त्रित के मध्य इन्द्र, गन्धर्व और वसु का समावेश है। इन्द्र ने सर्वप्रथम सौर ऊर्जा का ज्ञान प्राप्त किया, गन्धर्व ने उसका परीक्षण किया तथा वसुओं ने उसको मूर्तरूप दिया। वसु का अर्थ है- भौतिक विज्ञान के विशेषज्ञ। इस प्रकार एक वैज्ञानिक प्रक्रिया के सदृश्य एक ने उसका ज्ञान प्राप्त किया, दूसरे ने परीक्षण तथा तीसरे ने इसको मूर्तरूप (प्रयोग किया) दिया। इस प्रकार सौर ऊर्जा के सफल आविष्कार का श्रेय त्रित देवों (इन्द्र, गन्धर्व और वसु) को दिया जाता है।

> **त्रित एनम् आयुनग् इन्द्र एणं प्रथमो अध्यतिष्ठत्।**
> **गन्धर्वो अस्य रशनाम् अगृह्णात् सूरात् अश्वं वसवो निरतष्ट॥**[6]

सूर्य की किरणों में सात प्रकार की ऊर्जा -

ऋग्वेद के मन्त्र में वर्णित है कि सूर्य की सात किरणों से सात प्रकार की ऊर्जा (सप्तपदी) प्राप्त की जा सकती है। इस ऊर्जा से ईष् (अन्न) और ऊर्ज् (ऊर्जा) दोनों प्राप्त की जा सकती है। मन्त्र में 'अधुक्षत्' (दुहा) का प्रयोग प्राप्त होता है। इसका अभिप्राय यह है कि सूर्य से सात प्रकार की सौर ऊर्जा (Solar energy) प्राप्त हो सकती है। प्रत्येक रंग की किरण

का अलग-अलग प्रभाव है । इस सौर ऊर्जा का अन्न उत्पादन अर्थात् कृषि उद्योग और ऊर्जा अर्थात् विद्युत् उत्पादन दोनों में प्रयोग हो सकता है ।

अधुक्षत्पिप्युषीमिषमूर्जं सप्तपदीमरिः । सूर्यस्य सप्त रश्मिभिः ॥[7]

सूर्य में ऊर्जा का खज़ाना-

ऋग्वेद के मन्त्र में ही वर्णन प्राप्त होता है कि परमात्मा ने सूर्य में ऊर्जा का खज़ाना रखा हुआ है ।

स शेवधिं नि दधिषे विविवस्वति ॥[8]

सौर ऊर्जा के आविष्कारक वसिष्ठ तथा भरद्वाज ऋषि-

ऋग्वेद के एक अन्य मन्त्र में ही प्राप्त होता है कि वसिष्ठ तथा भरद्वाज ऋषि ने अत्यन्त गूढ़ रहस्य (**परमं गुहा यत्**) सौर ऊर्जा को बहुत मनन-चिन्तन के पश्चात् प्राप्त किया है ।

अविन्दन्ते अतिहितं यदासीद्यज्ञस्य धाम परमं गुहा यत् ।
धातुर्द्युतानात्सवितुश्च विष्णोर्भरद्वाजो बृहदा चक्रे अग्नेः ॥[9]

सूर्य में आकर्षण-शक्ति-

ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में वर्णित है कि सूर्य की किरणों में विद्युत्-चुम्बकीय प्रवाह (**Electro-Magnetic Radiation**) हैं । इस विद्युत्-चुम्बकीय प्रवाह के कारण सूर्य पूरे सौर मण्डल को अपने आकर्षण से रोके हुए है । सारे ग्रह नक्षत्र बिना सहारे के ही आकर्षण शक्ति से रुके हुए हैं ।

सूर्येण-उत्तभिता द्यौः ।[10]
अस्कम्भने सविता द्याम् अदृंहत् ।[11]

ऋग्वेद के अनुसार सूर्य ने अपनी किरणों से पृथ्वी को रोक रखा है ।

सविता यन्त्रैः पृथिवीम् अरम्णात् ।[12]
चकृषे भूमिम् ।[13]

सूर्य के चारों ओर विशाल गैस-

ऋग्वेद में सूर्य के लिए वैज्ञानिक तथ्यों का संकलन है जिसे प्राचीन ऋषियों ने अपने योगबल से ग्रहण किया था । दीर्घतमस् ऋषि का कथन है कि मैंने योगबल की दृष्टि से देखा है कि सूर्य के चारों ओर दूर-दूर तक शक्तिशाली गैस (धूम) फैली हुई है । मन्त्र में शक्तिशाली गैस के लिए 'शकमयं धूमम्' शब्द का प्रयोग किया गया है ।

शकमयं धूमम् आराद् अपश्यम्
विषुवता पर एनावरेण ॥[14]

सूर्य में धब्बे-

ऋग्वेद में वर्णित है कि सूर्यमण्डल में कुछ धब्बे (काले चिन्ह, Spots) हैं । मन्त्र का कथन है कि सूर्य की चक्षु (मण्डल या घेरे) में रजस् (धूल या धब्बे) हैं ।

सूर्यस्य चक्षु रजसैत्यावृतम् ॥[15]

सूर्य की परिधि (Circumference) का दर्शन-

ऋग्वेद के अनुसार इन्द्र ने सूर्य की परिधि को चारों ओर से देखा । योगदृष्टि के द्वारा ही यह सम्भव हो सकता है कि सूर्य की परिधि को चारों ओर से देखा जा सके ।

विश्वावसुं सोम गन्धर्वमापो ददृशुषीस्तदृतेना व्यायन् ।
तदन्ववैदिन्द्रो रारहाण आसां परि सूर्यस्य परिधींरपश्यत् ॥[16]

सूर्य से पृथिवी की उत्पत्ति-

ऋग्वेद के मन्त्रानुसार वरुण (Electron) ने सूर्य से पृथिवी को बनाया है अर्थात् पृथिवी सूर्य का एक इलेक्ट्रानिक अंश है ।

इमामू ष्वासुरस्य श्रुतस्य महीं मायां वरुणस्य प्र वोचम् ।
मानेनेव तस्थिवाँ अन्तरिक्षे वि यो ममे पृथिवीं सूर्येण ॥[17]

निष्कर्ष

आदित्य का प्रयोग सूर्य के विशेषण के रूप में प्राप्त है । सूर्य एक परमज्योति है जो स्थावर अथवा जङ्गम जीवन प्रदान करता है । सम्पूर्ण ऋग्वेद में ऐसी अनेक ऋचाएँ विद्यमान हैं जो सूर्य के वैज्ञानिक स्वरूप को उद्घाटित करती हैं । परमात्मा की सबसे सर्वोच्च रचना सूर्य है यह बात ऋग्वेद की ऋचाओं से परिपुष्ट हो जाता है । वर्तमान में जो भी विज्ञान सूर्य के विषय में जानकारियाँ प्राप्त कर रहा है वह सभी ऋग्वेद की ऋचाओं में समाहित हैं । सूर्य के चारों ओर विशाल गैस, सूर्य में काले धब्बे, सूर्य की परिधि, सूर्य की रश्मि विज्ञान, सूर्य का जीवविज्ञान, सूर्य की गुरुत्वाकर्षण शक्ति इत्यादि बहुत सारे विषय हैं जो ऋग्वेद अपनी ऋचाओं में समाहित किए हुए है ।

संदर्भ सूची

1. निरुक्त 2.4
2. दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्यः । (अष्टा. 4/1/85)
3. ऋ. 1.115.1
4. ऋ. 1.50.11
5. ऋ. 10.89.2
6. ऋ. 1.163.2
7. ऋ. 8.72.16
8. ऋ. 2.12.6
9. ऋ. 10.181.2
10. ऋ. 10.85.1
11. ऋ. 10.14.1
12. ऋ. 10.149.1
13. ऋ. 1.52.12
14. ऋ. 1.164.43
15. ऋ. 1.164.14
16. ऋ. 10.139.4
17. ऋ. 5.85.5